डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा कथासंधि कार्यक्रम आयोजित
प्रख्यात कथाकार सूर्यबाला ने किया कहानी–पाठ
अपने दुखों की शरणस्थली है मेरा लेखन – सूर्यबाला

नई दिल्ली। 26 अगस्त 2022. साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित कार्यक्रम कथासंधि में आज प्रख्यात कथालेखिका एवं व्यंग्यकार सूर्यबाला जी ने अपनी कहानी एवं व्यंग्य का पाठ किया। अपने व्यंग्य पत्नी और पुरस्कार में उन्होंने पत्नी द्वारा पुरस्कार पाने की स्थिति में पत्नी और बच्चों की अजीब और हास्यप्रद स्थिति का चित्रण किया। इसी व्यंग्य में एक पंक्ति थी – पुरस्कार पाकर ऐसा लगा कि मैं गरीबी रेखा से ऊपर आ गई। इसके बाद उन्होंने अपनी कहानी "दादी और रिमोट" प्रस्तुत की, जिसमें एक बुजुर्ग दादी के मुंबई पहुँचने और फ्लैट में भाग–दौड़ की जिंदगी जी रहे एक परिवार के बीच उनकी मानसिक स्थिति का रोचक वर्णन था। दादी का मन बहुत लंबे समय के बाद टी.वी. देखने से लगा जिसमें दिखाए जा रहे चित्रों को वे साक्षात् समझती रहीं लेकिन जल्द ही उनसे उनका मोह भंग हो गया और उन्हें अपने गाँव और वहाँ का खुलापन याद आने लगा और धीरे–धीरे वे वहाँ की भाग–दौड़ का एक हिस्सा होकर रह गई।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अपनी रचना–यात्रा के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि मेरा लेखन ही मेरे दुखों की शरण स्थली बना। मेरे पर लगातार किसी समर्थ स्त्री का चरित्र न देने का आरोप लगता रहा है। इस संबंध मेरा कहना है कि मेरी स्त्रियाँ संघर्ष और अन्याय की दुहाई नहीं देती और वे दूसरों की कृपा पर निर्भर नहीं है। उन्होंने अपने समृद्ध और सुखी बचपन और पिता की मौत के बाद अचानक आए संघर्ष के बारे में भी कई अनुभव साझा किए। पुरस्कारों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि लिखना अपने–आप में मिलना है और पाठकों का प्यार ही सबसे बड़ा पुरस्कार है। आगे उन्होंने बताया कि उनका लेखन अंतर्मन का सहज संवाद है और वे किसी विचारधारा में बंधकर लिखना पसंद नहीं करती है। उन्होंने अपनी रचना यात्रा के प्रारंभ में सारिका के संपादक कमलेश्वर और धर्मयुग के संपादक धर्मवीर भारती को विशेष रूप से याद करते हुए कहा कि इन लोगों से उनमें लिखने का आत्मविश्वास जगाया।

के. श्रीनिवासराव